

# डॉ. केनेथ मैथ्यूजः उत्पत्तिः सत्र 18 याकूब और लाबानः उत्पत्तिः

© 2024 केनेथ मैथ्यूज और टेड हलिडेब्रांट

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज द्वारा उत्पत्ति की पुस्तक पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 18 है, याकूब और लाबान, उत्पत्ति अध्याय 29 से 31।

आज, हम याकूब और लाबान तथा पददन अराम में उनके संबंधों पर विचार कर रहे हैं, जहाँ अध्याय 29 में याकूब अपने घर से भागकर बेरशेबा में अपने परिवार के घर, अपनी माँ के भाई, रेबेका के भाई लाबान के पास गया था।

और वास्तव में, आप सोच सकते हैं कि ये तीन अध्याय, 29, 30 और 31, किस तरह से बाहर की ओर भागने के द्वारा चिह्नित हैं। अध्याय 29 के मामले में, वह अपने भाई एसाव से भागता है, जो उसे मारने के लिए बाहर है। फिर, अध्याय 31 में, वह अपने चाचा लाबान से भागता है क्योंकि वह वहाँ उत्पीड़न का अनुभव करता है।

इसलिए यह एक बेहतर व्यवस्था बनने के बजाय, हम पाएंगे कि यह याकूब के अनुभवों में और भी विनाशकारी बन जाती है। आप अध्याय 29 को पददन अराम, विशेष रूप से हारान शहर में उसके प्रवेश के रूप में सोच सकते हैं। और फिर अध्याय 31 में, वह जाने की योजना बनाता है।

अध्याय 30 में, दोनों के बीच में धुरी है। उस अध्याय में, उसके बच्चों की वृद्धि और झुंडों और झुंडों की वृद्धि का वर्णन है। अब इन अध्यायों को समझने के लिए पृष्ठभूमि बहुत महत्वपूर्ण है।

हम इसे अध्याय 31 में पढ़ सकते हैं। और आप मेरे साथ अध्याय 31 में देख सकते हैं, जहाँ हम परमेश्वर को बोलते हुए सुनते हैं। और वह पद 13 में कहता है, मैं बेथेल का परमेश्वर हूँ।

आपको अध्याय 28 याद होगा, जहाँ परमेश्वर ने स्वप्न में याकूब को स्वयं को प्रकट किया था। स्वर्ग और पृथ्वी को जोड़ने वाली सीढ़ी और ऊपर चढ़ने और नीचे उतरने वाले स्वर्गदूतों को याद करें। जैसा कि आप जानते हैं, बेथेल को परमेश्वर का घर कहा जाता था और यह न केवल कुलपतिओं के जीवन में बल्कि पूरे इस्राएल के इतिहास में धार्मिक महत्व का स्थान बन गया।

इसलिए, वह 13 में कहता है, मैं बेथेल का परमेश्वर हूँ जहाँ तुमने एक स्तंभ का अभिषेक किया था। याद रखें कि उसने पत्थर को या तो अपने सरि के नीचे या अपने सरि के बगल में ले लिया जहाँ वह सोने के लिए लेटा था। और, उह, उसने इसे एक स्तंभ के रूप में स्थापित किया, उह, परमेश्वर की उपस्थिति की मान्यता का स्थान और फिर आगे बढ़ते हुए और जहाँ तुमने मुझसे एक प्रतज्ञा की, यह विश्वास की प्रतज्ञा थी, कि बेथेल लौटने पर वह खुद को और अपने संसाधनों को यहाँ, बेथेल के परमेश्वर की आराधना में दे देगा।

और श्लोक 13 को समाप्त करते हुए, अब इस भूमि को छोड़ो और अपनी जन्मभूमि पर वापस जाओ। तो, यह समझने के लिए पृष्ठभूमि है कि अध्याय 28 में क्या होगा। हमारे पास

शास्त्र में पहला अवसर है जो अब व्यक्तगित, उह, रशिते को याद करता है जो भगवान के साथ वकिसति होना शुरू हो जाएगा।

वह परमेश्वर को अपने पूर्वजों के परमेश्वर के रूप में पहचानता है। वह अब्राहम और उसके पति इसहाक से कए गए वादों को पहचानता है, लेकिन वह अपने अनुभव से परमेश्वर को व्यक्तगित रूप से नहीं जानता था। लेकिन अब वह परमेश्वर के साथ उस अनुभव को शुरू करता है, और यह वकिसति और बढ़ेगा, जैसा कि हम हारान शहर में उसकी कठनि परसिथितियों में देखते हैं।

अब, जब हम इन अध्यायों को देखते हैं, तो चीजें बेहतर नहीं, बल्कि बिदतर होती जाती हैं। कोई सोचगा, ठीक है, वह भगवान के साथ इस रशिते को वकिसति कर रहा है। वादे कए गए हैं।

वह हारान शहर जा रहा है। उसे ये अनुभव होंगे जहाँ उसकी पत्नी और बच्चे होंगे और वह समृद्ध होगा। और थोड़ी देर बाद, रेबेका, जो उसकी पत्नी या बल्कि उसकी माँ थी, ने सोचा कि वह वापस आ जाएगा और हम देखेंगे कि वादे पूरे हो रहे हैं।

लेकिन ऐसा बलिकुल नहीं है। जो होता है वह यह है, कंधोखे पर धोखे होते हैं। और जैसा कि हमने याकूब और एसाव के बीच गर्भ में देखा, जहाँ संघर्ष था, हम पाएंगे कि अब याकूब और लाबान के बीच संघर्ष है और लआि और राहेल के बीच प्रतस्पर्धा है।

और फिर उसकी दो पत्नियों के पास जाना है, और फिर बेटियों और उनके पति लाबान के बीच संघर्ष होने वाला है। तो खुशी की बात है कि यह अध्याय 31, श्लोक 32 में एक शांति संधि में समाप्त होगा। इसलिए, हमारे यहाँ तनाव है।

और तनाव, जैकब और, माफ़ कीजिए, अब्राहम और इसहाक के विपरीत, जहाँ संतानोत्पत्ति का तनाव था, हम पाएंगे कि जैकब के कई बच्चे होंगे। संतानोत्पत्ति समस्या नहीं है। और वह बहुत अमीर बन जाएगा।

लेकिन समस्या कहाँ है? समस्या यह है कि वह उस देश में नहीं है। और परमेश्वर ने अध्याय 28 में, बेथलेहम के सपने में वादा किया है कि वह उसे वापस लाएगा। और इसलिए, हम पाएंगे कि परमेश्वर याकूब से बात करता है और कहता है, अब तुम्हारे लौटने का समय आ गया है।

कतिना समय बीत चुका है? खैर, 20 साल हो चुके हैं, उसकी पहली पत्नी लआिह के लिए सात साल, उसकी दूसरी पत्नी राहेल के लिए मजदूरी का भुगतान करने के लिए सात साल काम करना। और फिर लाबान के लिए जो कुछ भी हम पाते हैं उसके झुंड की देखभाल करने के लिए छह साल। और यह याकूब द्वारा बताया गया है, जो इसके बारे में बोलता है।

और जब वह अध्याय 31 में राहेल और लआि से बात करता है, तो वह इस बारे में बात करना शुरू करता है। और वह पाँचवीं आयत में उनसे कहता है, मैं देखता हूँ कि तुम्हारे पति का मेरे प्रती रवैया पहले जैसा नहीं रहा। अब, यह और भी ज्यादा शतरुतापूर्ण होता जा रहा है।

इन दोनों के बीच तनाव बढ़ रहा है। लेकिन मेरे पति का परमेश्वर मेरे साथ है। और इसलिए, वह इन सभी बाधाओं और लाबान द्वारा दुर्व्यवहार के बावजूद प्रभु में अपना विश्वास और भरोसा व्यक्त कर रहा है।

परमेश्वर स्वयं को विश्वासयोग्य दिखाएगा। छह में फरि से शुरू करते हुए, आप जानते हैं कि मैंने अपनी पूरी ताकत से आपके पति के लिए काम किया है। समस्या यह नहीं थी कि वह काम में वफिल हो गया, बल्कि लाबान की बेटियों के बारे में लाबान के साथ उसकी व्यवस्था और फरि काम जारी रखने की थी।

हाँ, उन छह अतिरिक्त वर्षों के दौरान, लाबान के झुंडों की देखरेख की। फरि भी, वह पद सात में कहता है, तुम्हारे पति ने मेरी मजदूरी 10 बार बदलकर मुझे धोखा दिया है। 10 शायद वह शब्द है जो उस संख्या को दर्शाता है जो पूर्णता या संपूर्णता के विचार को दर्शाता है।

हालाँकि, परमेश्वर ने उसे मुझे नुकसान पहुँचाने की अनुमति नहीं दी है। तो, आप फरि से देखते हैं कि वह परमेश्वर के वादे के अनुसार, अपनी ओर से मध्यस्थता करने के लिए प्रभु पर अपना भरोसा और विश्वास रख रहा है। आठवाँ श्लोक: यदि तुम्हारे पति ने कहा कि धब्बेदार बच्चे तुम्हारी मजदूरी होंगे, तो सभी झुंडों ने धब्बेदार बच्चे पैदा किए।

और अगर उसने कहा कि धारीदार जानवर तुम्हारी मजदूरी होंगे, तो सभी झुंडों ने धारीदार बच्चे पैदा किए। तो, भगवान ने तुम्हारे पति के पशुधन को छीन लिया है और उन्हें मुझे दे दिया है। तो फरि, जो कुछ ही रहा है उसकी एक व्याख्या इस आधार पर है कि भगवान दोनों के बीच व्यवस्था का ख्याल रख रहे हैं।

फरि अगर आप मेरे साथ अध्याय 31 में देखेंगे, तो वहाँ हमें एक और विवरण मिलता है। इस बार, याकब लाबान से बात कर रहा है और उसे समझा रहा है कि वह लाबान के प्रति कितना वफादार और मेहनती रहा है। और फरि भी लाबान ने उसे धोखा देकर उसके साथ बुरा व्यवहार किया।

हम इसे तब उठाएँगे जब वह पद 41 में कहता है, मैंने वही किया जो सही था। वह कहता है, यह इस तरह था, 20 साल तक मैं तुम्हारे घर में था। और पछिले वाक्यों में, उसने इस बारे में बात की कि वह कैसे सुनिश्चित कर रहा था कि वह जिन भेड़ों और बकरियों की देखभाल करता था, उनकी देखभाल जंगली जानवर करें और कैसे वह लाबान के लिए लगन से काम करता था। चाहे गर्मी हो या सर्दी, दिन हो या रात, वह कर्तव्य पर था, और उसने देखा कि उसका कर्तव्य पूरा हो रहा था।

तो, 41 आयत 41 पर वापस आते हुए, मैंने तुम्हारे लिए 14 साल तुम्हारे दो डॉलर के लिए और छह साल तुम्हारी मजदूरी या मेरी मजदूरी के 10 गुना के लिए काम किया। तो, 20 साल कठिन परिश्रम में बीताए गए। लेकिन फरि भी वह परमेश्वर के आशीर्वाद और देखरेख के साथ उभरता है।

एक धनी व्यक्ति इतनी प्रतिष्ठा और धन वाला व्यक्ति एक ऐसा व्यक्ति बन जाता है जिससे ईर्ष्या की जाती है। लाबान के बेटों की ईर्ष्या ऐसी है कि जब उसका जाना अचूका होता है, तो उसे चले जाना चाहिए। अब, हम अनुभवों में जो पाते हैं, उसमें हमेशा कठिनाइयाँ और नरिशाएँ, धमकियाँ और शत्रुताएँ होती हैं। और खुद कुलपतिओं की ओर से, हम देखते हैं कि वे अपनी वफादारी में वफिल हो रहे हैं।

वे अपनी नैतिकता में कभी-कभी वफिल हो जाते हैं। और वास्तव में, यद्यपि ऐसा परिवार चुनना हो जैसे परमेश्वर भलाई के लिए उपयोग करेगा, तो ऐसा लगता है कि अब्राहम के परिवार को एक गंभीर उम्मीदवार के रूप में नहीं लिया जाएगा। और फिर परमेश्वर क्यों आशीषों पर आशीषें बरसाना जारी रखेगा, उनके अधर्म के लिए उन्हें पुरस्कृत नहीं करेगा, बल्कि उनके अधर्म को इस हद तक सहन करेगा कि वह अभी भी सभी लोगों के समूहों के लिए आशीष के पात्र के रूप में उनके साथ काम करने में सक्षम होगा?

तो, यहाँ जो कुछ है वह परमेश्वर का पर्यवेक्षण है, परमेश्वर का कार्यान्वयन है, वादों को दिखाना है, यह दिखाना है कि यह कुलपतिओं पर निर्भर नहीं है। यद्यपि यह कुलपतिओं पर निर्भर होता, तो हम कभी भी योजना शुरू नहीं करते। लेकिन यह परमेश्वर की भलाई और सभी लोगों के लिए आशीर्वाद में शक्ति के कारण था कि वह अपनी बुद्धि, अपने अनुग्रह, अपनी दया में, इस योजना को पूरा कर सका।

परणामस्वरूप, न केवल अब्राहम के वंशज परमेश्वर की उपस्थिति में परमेश्वर द्वारा समृद्ध हुए, बल्कि जब आप पुराने नियम में पाए जाने वाले महान इतिहास को पढ़ना जारी रखेंगे, तो यह बताएगा कि यह समूह सभी लोगों के लिए परमेश्वर की योजना का एक माध्यम कैसे होगा। इसका संकेत दिया गया है, और फिर पुराने नियम में इसका चित्रण किया गया है, जो अब्राहम के वंशजों, यीशु मसीह, हमारे प्रभु में एक सुखद परिणतितक पहुंचता है। अब, जब आप इन विभिन्न घटनाओं को देखते हैं, जैसे कि हम अध्याय 29, 30 और 31 में पाते हैं, तो आप खुद से कह सकते हैं, कतिना भयानक अव्यवस्थिति परिवार।

और वे थे, इसमें कोई संदेह नहीं है। और आप कह सकते हैं, कुलपति और उनके रशितेदारों को जैसी तरह से पीड़ा होती है, उसके लिए यह कतिना भयानक है? वे सभी प्रकार की पापपूर्ण योजना, धोखे, दुष्टता और उस तरह की चीजों से पीड़ित हैं। लेकिन हम जो पाएंगे, जैसा कि मैं अभी कह रहा था, परमेश्वर अभी भी इसका उपयोग याकब को अधिक विश्वास वाला व्यक्तित्व बनाने और परमेश्वर के साथ अधिक गहरा और गहन संबंध बनाने के लिए कर सकता है।

और यह याद रखना हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है कि हम कुलपतिओं के जीवन में एक अनुभव या पुराने नियम या नए नियम में किसी भी अनुभव को नहीं लेना चाहते हैं, और इसे बड़ी कथात्मक कहानी से अलग नहीं करना चाहते हैं। यह बड़ी कथात्मक कहानी, ईश्वर के उच्च उद्देश्यों, आशापूर्ण वास्तविकता और ईश्वर की योजना के भविष्य को साकार करने के संदर्भ में है जो हमें इन नरिशानक घटनाओं में मिलती है, अर्थ, अर्थ इसलिए क्योंकि यह बड़े ढांचे में स्थापित है। अलगाव में, इसकी गलत व्याख्या की जाती है।

इसे ईश्वर की ओर से वफिलता के रूप में समझा जा सकता है। दुख और शर्म को ईश्वर के परणामस्वरूप त्याग के रूप में समझा जा सकता है। इसे गलत तरीके से इस तरह से समझा जा सकता है कि ईश्वर ने झूठ बोला है या उसके पास योजनाओं को पूरा करने की इच्छा और क्षमता नहीं है।

इसलिए, जब तक आप इसे बड़े ढांचे में नहीं रखते, तब तक सभी तरह की गलतफहमियाँ हो सकती हैं। और इसलिए, मैं आपसे कहूँगा, नया नियम भी यही कहता है, कि कैसे परमेश्वर हमारे जीवन में विभिन्न चुनौतियों का उपयोग करता है, लेकिन फिर भी

हमारे जीवन में इन घटनाओं को लेने और इसे परमेश्वर द्वारा हमें बदलने और पवतिर आत्मा के द्वारा अपने पुत्र, यीशु मसीह के माध्यम से उसके साथ हमारे रश्ते को गहरा करने के अच्छे उद्देश्य के साथ क्या कर रहा है, के बड़े ढांचे में रखता है। और इसलिए मसीह यीशु में हमारे पास वह आनंद और आशावाद है, जैसा कि कुलपिताओं के लिए सच था जब वे उस सकारात्मक रश्ते पर ध्यान केंद्रित करते थे जो परमेश्वर उन्हें दिखा रहा था।

वह खुद को दिखा रहा है, देखा जाना चाहता है, खुद को बार-बार प्रकट कर रहा है ताकि वफादारी और परशिरम को मजबूत और प्रोत्साहित किया जा सके। और हमें भी, मसीहियों के रूप में, यह याद रखना चाहिए कि हमारे जीवन में होने वाली घटनाएं ऐसी नहीं हैं जिनका कोई उद्देश्य या साधन नहीं है, कि यह कोई संयोग नहीं है जिसे आप संयोग कह सकते हैं। नहीं, हमें यह याद रखना चाहिए, जैसा कि पौल ने अपने कुरनिथियन पत्राचार में नए नियम में कहा है, कि उसने दुख का अनुभव किया है फिर भी आनंदित है।

इसलिए दुख के बीच भी, ईसाइयों के हिससे में खुशी हो सकती है क्योंकि हम जानते हैं कि हमारे प्रभु यीशु मसीह में परमेश्वर की योजना साकार हो गई है, और आगे और भी बहुत कुछ होना बाकी है। और यही बात हमें हमारे विश्वास और खुशी की स्थायित्व प्रदान करती है। तो चलिए थोड़ा गहराई से देखें।

अध्याय 29 में लाबान ने याकूब को धोखा दिया। और इसलिए, हमें बताया गया है कि याकूब पददन अराम में आता है, और वहाँ उसे एक कुआँ मलित्ता है और वह उस पर पहुँच जाता है। और इसमें अब्राहम के सेवक की प्रतधिवनियाँ होंगी जो उसी स्थान पर गया था।

वहाँ एक कुआँ था, और यहीं पर उसकी मुलाकात इसहाक की पत्नी, याकूब की माँ से हुई। और इसलिए, आपको याद होगा कि यह याकूब का था, बल्कि यह रेबेका थी, जिसने अब्राहम के नौकर को पानी पिलाया और उसकी लोमड़ी को भी पानी पिलाया। खैर, इस मामले में, यह उलटा होने जा रहा है।

यह याकूब ही है जो कुएँ से पत्थर हटाता है और राहेल और उसकी भेड़ों के लिए जरूरी पानी उपलब्ध कराता है क्योंकि वह भी एक चरवाहा है। तो, यह एक ऐसी प्रतधिवनी है जो आपको पूरी कहानी में बार-बार मलित्ता। परणामस्वरूप, अब्राहम के लिए ये कई संकेत हमें दिखाते हैं कि अब्राहम और इसहाक के लिए परमेश्वर का एक उत्तराधिकारी है, और यह वैसा ही होने जा रहा है जैसा कि अध्याय 25 में गर्भ की घटना में भविष्यवाणी की गई थी जहाँ कहा गया है कि बड़ा बेटा छोटे की सेवा करेगा और परमेश्वर अपने वादों को पूरा करने की प्रक्रिया में है।

फिर हमारे पास यह उलटफेर होता है, और यह एक सुखद सुवागत में विकसित होता है। और यही हम पद 14 में पाते हैं जब वह अपने भतीजे याकूब के बारे में घोषणा करता है, और वह पद 14 में कहता है, तुम मेरे अपने मांस और खून हो। तो यहाँ एक ऐसा रश्ता है जो एक सकारात्मक परणाम, एक खुशहाल रश्ते की ओर ले जाना चाहिए।

लेकिन जैसा कि हम देखते हैं, लाबान याकूब के मामले में एक वास्तविक प्रतधिवंदी है। अब हम देखते हैं कि धोखेबाज याकूब बार-बार धोखा खाता है। और इसलिए, हमारे पास परिवार में कलह है और यह परिवार के कलह के भीतर है, जैसा कि हमने पहले के अवसरों पर देखा है, कि वादों के संबंध में एक खतरा है।

यह भूमि के लिए और भूमि पर वापसी के लिए बड़ा खतरा है। खैर, हमें बताया गया है कि याकूब राहेल से प्यार करता था। तो, यहाँ एक रोमांस विशेषता पाई जाती है, और आप इसे श्लोक 18

में उठाएंगे।

जैकब राहेल से प्यार करता था, और यहाँ उसका प्रस्ताव है। अब आपको याद रखना होगा कि जैकब के पास राहेल को व्यावसायिक तरीके से खरीदने के लिए कोई धन नहीं था, फरि भी एक रश्ते पर आधारित था, कोई कच्ची खरीद नहीं जैसा कि आप सोच सकते हैं, बल्कि इसमें एक दुल्हन की कीमत शामिल है। इसलिए यहाँ उसका सबसे अच्छा प्रस्ताव है।

मैं आपकी छोटी बेटी राहेल के बदले में सात साल तक आपके लिए काम करूँगा। और सात साल के अंत में, हमें श्लोक 20 में बताया गया है कि उसके लिए उसके प्यार के कारण वे उसे कुछ ही दिन लगे। और इसलिए, सात साल, उसने इनाम देखा, न कि सात साल तक लाबान के लिए काम करने के साथ आने वाली वभिन्न कठिनाइयाँ।

अब, हारान में परंपरा यह थी कि बिड़ी बेटी की शादी पहले और छोटी बेटी की शादी बाद में होनी थी। और इसलिए, लाबान ने शादी के लिए दावत देकर याकूब को धोखा दिया, लेकिन संभोग की रात राहेल की जगह लीआ को रखा। और बेशक, एक आम सवाल यह है कि आखिर उसे क्यों नहीं पता था कि यह वास्तव में राहेल की जगह लीआ थी? खैर, दावत में शराब होती है, और वह नशे में या थोड़ा नशे में हो सकता है और फरि एक अंधरे तम्बू में हो सकता है।

और फरि लीआ ने रात के कपड़े पहने होंगे। लेकिन मुद्दा यह है कि इस अंश में, हमें ठीक से नहीं बताया गया है कि यह कैसे होगा, लेकिन सुबह ही उसे एहसास हुआ कि उसने लीआ से शादी कर ली है और उसे धोखा दिया गया है। श्लोक 25 में, लाबान ने रीत-रिवाज के बारे में बताया और फरि उसने याकूब के साथ एक और व्यवस्था की।

और वह इस सप्ताह के बाद, यानी विवाह उत्सव के सप्ताह के बाद, मैं तुम्हें राहेल दूँगा, लेकिन तुम्हें और सात साल काम करना होगा। हमें श्लोक 30 में बताया गया है कि और सात साल। तो यही होता है।

उसकी दो पत्नियाँ हैं, लीआ और राहेल, और राहेल ने अध्याय 30 में बच्चे पैदा करने के महत्व को व्यक्त किया है। जब राहेल ने, पद एक में, देखा कि वह याकूब के लिए कोई संतान पैदा नहीं कर रही है, तो वह अपनी बहन से ईर्ष्या करने लगी। इसलिए उसने याकूब से कहा, मुझे बच्चे दो या मैं मर जाऊँगी।

ऐसा लगता था कि उस समय, एक महिला का उद्देश्य बच्चे पैदा करना और वरिसत और वरिसत सुनिश्चित करना था। इससे महिला की भविष्य की सुरक्षा भी सुनिश्चित होती थी कि उसके बड़े बेटे उसकी देखभाल कर सकेंगे। इसलिए, हम फरि से पद 31 में पाते हैं, और अध्याय 29 में वापस जाते हैं, कि प्रभु को लीआ पर दिया आती है और वह लीआ के प्रति दिया दिखाता है, यह पहचानते हुए कि लीआ को प्यार नहीं किया गया था।

उसने उसका गर्भ खोला और उसे बच्चे दिए। और यही बात उन दोनों, लीआ और राहेल के लिए ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा का कारण बनी। अब, हम अध्याय 30 में पाते हैं कि

बच्चों को बढ़ाने का एक तरीका यह था कि, जैसा कि हमने अब्राहम और हागर के मामले में देखा, एक व्यक्ति को अतिरिक्त बच्चे पैदा करने के लिए एक दासी दी जाए।

और इसलिए, यह लीआ और उसकी दासी बलिहा के लिए मामला है, या बलका, मुझे कहना चाहिए, राहेल की दासी बलिहा, जो बच्चे पैदा करेगी। और फरि लीआ के लिए, यह उसकी दासी, ज़लिपा है, जसिने बच्चों को जन्म दिया, और उनका नाम रखा गया। मैं दोहराना चाहता हूँ, जैसा कि हम इस अध्याय में देखते हैं, कि पूरी समझ है कि भले ही कुछ स्थानीय लोककथाएँ, लोकरीति-रिवाज खेल में आते हैं, फरि भी वे समझते हैं कि आखिरकार यह भगवान ही है जो बच्चों को जन्म देता है।

तो, आप इसे अध्याय 30, श्लोक 2 में देख सकते हैं, याकूब राहेल से नाराज़ हो गया और उसने कहा, क्या मैं परमेश्वर की जगह पर हूँ? तो, वह समझता है कि यह अंततः परमेश्वर का नरिणय है, उसका नहीं। इसलिए, जब राहेल ने उससे कहा, मुझे बच्चे दो, या मैं मर जाऊंगी, तो वह गुस्से में जवाब देता है, तुम्हें बच्चे देना मेरे बस में नहीं है। यह प्रभु पर नरिभर करता है कि कौन बच्चे देता है।

और इसलिए, हम पाते हैं कि यह संघर्ष जारी है। और जैसा कि राहेल ने श्लोक 8 में कहा, फरि राहेल ने कहा कि मैंने अपनी बहन के साथ बहुत संघर्ष किया है, और मैं जीत गई क्योंकि बलिहा के बच्चे हुए हैं। यदि आप केवल इस आधार पर गणना करना चाहते हैं कि किसके दूसरे से अधिक बच्चे थे, तो आप पाएंगे कि लीआ के छह बेटे और एक बेटी दीना है, जो कहानी में आगे चलकर महत्वपूर्ण होगी।

और फरि उसकी दासी ज़लिपा के दो बेटे हुए। तो कुल मिलाकर आठ बेटे हुए। राहेल के दो बेटे होंगे, जिनमें से एक का जन्म तब होगा जब वे देश लौटेंगे।

और फरि उसकी दासी बलिहा के दो बेटे होंगे। तो कुल मिलाकर, चार बेटे हुए। और जब आप सब कुछ एक साथ जोड़ते हैं, तो याकूब के अनुसार, वे 12 बेटे इस्राएल के 12 गोत्रों के पूर्वज बन जाते हैं।

अब, आपके पास कामोददीपक या कम से कम जसिं कामोददीपक माना जाता है, उसका उपयोग करने की यह अजीब घटना है। और यह मैनड्रेक है। और जाहरि है, एक परंपरा थी कि मैनड्रेक के फल खाने से अधिक बच्चे पैदा होते थे।

तो, वहाँ दो षडयंत्रकारी महिलाएँ, आप देख सकते हैं कि वे कतिनी हताश हैं। उनका मानना है कि भगवान जन्मिंदार हैं। आखिरकार, वे फरि भी याकूब को मैनड्रेक के माध्यम से हेरफेर करके, भगवान को गुमराह करने का प्रयास करती हैं।

मैनड्रेक, जैसा कि मैंने कहा, वसंत ऋतु में पीले-लाल रंग का फल था। और इसके बारे में सबसे खास बात यह थी कि मैनड्रेक पौधे की जड़ें मनुष्य के नचिले धड़ की तरह थीं। और तब इसे कामोददीपक के रूप में सुझाया जा सकता था।

लेकिन देखिए कि किथावाचक अध्याय 30, श्लोक 24 में क्या कहता है, जहाँ वह अपने गर्भस्थ शशु का नाम रखता है। उसका नाम यूसुफ है। यूसुफ योगे या जोड़ के वचन से संबंधित है।

और इसलिए, राहेल श्लोक 24 में कहती है, यहोवा, यह प्रभु का वफादार वाचा नाम है, उसका व्यक्तिगत नाम, प्रभु मुझे एक और पुत्र दे। इसलिए, उनके हिससे मैं सही धर्मशास्त्र की मान्यता है, और फरि भी वे पूरी तरह से प्रभु पर भरोसा करने को तैयार नहीं हैं। अब, हम इस अध्याय में आगे बढ़ते हैं कि याकूब अपने झुंड का निरमाण कैसे करता है।

और इसलिए, हम बच्चों, यूसुफ, और अब झुंडों के बढ़ने और बढ़ने की ओर बढ़ते हैं। तो, यह लाबान की प्रतिक्रिया है। अब हम लाबान और याकूब के बीच द्वंद्व जारी रखने जा रहे हैं।

तो, वह कहता है, वह जैकब है, वह कहता है, अब मेरे जाने का समय हो गया है। देखो मैंने क्या-क्या किया है। अब मुझे मेरी पत्नियों और बच्चे दे दो, और मैं चला जाऊंगा।

लेकिन लाबान ने श्लोक 27 में उससे कहा, देखो, चलो एक और सौदा करते हैं। और वह वास्तव में भवषियवाणी के द्वारा ईश्वर को चित्र में लाता है, वह कहता है। और भवषियवाणी से उसका मतलब है किसी तरह के यांत्रिक साधनों के माध्यम से छपि हुए ज्ञान की खोज करना।

और इसलिए, प्रभु ने मुझे तुम्हारे कारण आशीर्वाद दिया है। क्या तुम्हें याद है कि जब गरार के राजा अबीमेलक की बात आई थी, तो यह कैसा मामला था, क्योंकि अब्राहम और फरि इसहाक के प्रति परमेश्वर ने जो अनुग्रह दिखाया और प्रदर्शित किया था? तब अबीमेलक, प्रत्येक मामले में संबद्ध होना चाहता था।

वह अब्राहीम और इसहाक के साथ एक संधि, एक रशिता बनाना चाहता था। और यही हम यहाँ पाते हैं। मैं देखता हूँ, वह श्लोक 27 में कहता है, कि प्रभु ने तुम्हारे कारण मुझे आशीर्वाद दिया है।

तो, आप फरि से वचन देख सकते हैं; यह उतना स्पष्ट नहीं है, लेकिन यह नहिती है। जो कोई तुम्हें आशीर्वाद देगा, अब्राहम, मैं उसे आशीर्वाद दूंगा। जो कोई तुम्हें शाप देगा, मैं शाप दूंगा।

और सरिफ़ जन्म से, संबंध से, संगति से, लाबान को लाभ होगा। अब, लाबान द्वारा याकूब के साथ किए गए दुरुव्यवहार के कारण यह उल्टा हो जाएगा। इसलिए, हम इसे फरि से पद 29 से 30 में घटते होते हुए देखते हैं।

याकूब कहता है, तुम जानते हो, मैंने तुम्हारे लिए काम किया है और मेरे संरक्षण में तुम्हारे पशुओं का क्या हाल हुआ है। मेरे आने से पहले जो थोड़ा-बहुत तुम्हारे पास था, वह बहुत बढ़ गया है। और जहाँ भी मैं गया हूँ, प्रभु ने तुम्हें आशीर्वाद दिया है।

तो अब मेरे लिए अपना काम करने का समय आ गया है, अपना घर बनाना है, अपने झुंड बनाना है। और जिस तरह से यह व्यवस्था की जाएगी वह दोनों के बीच एक समझौता है और लाबान खुद को मास्टर मैनिपुलेटर मानते हुए अपने मन में यह सुनिश्चित करने की कोशिश करता है

कविह याकूब को जो प्रस्ताव देता है, या वे कोई व्यवस्था करते हैं, वह ऐसी हो कि उसका ऊपरी हाथ हो। तो, आइए देखें कि व्यवस्था क्या है।

याकूब कहता है कि मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे कुछ दो। मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे समृद्ध करों। आप देख सकते हैं कि यह आपको अध्याय 14 में अब्राहम और सदोम के राजा की याद दिलाता है, जहाँ सदोम का राजा अब्राहम को लूट का माल देना चाहता था, उस महान जीत से लूट का माल जो अब्राहम ने योद्धाओं के उस पूर्वी गठबंधन के खिलाफ नेतृत्व किया था जैसे उसने पीछा किया और हराया था।

लेकिन अब्राहम ने कहा कि मैं परमेश्वर द्वारा समृद्ध हो जाऊंगा। मैं तुम्हारे द्वारा, सदोम के राजा के रूप में, एक कनानी राजा के रूप में समृद्ध नहीं होऊंगा। इसलिए यहाँ यह बात ध्यान में है जब वह कहता है, मैं बस इतना चाहता हूँ कि जब मैं तुम्हारे झुंडों की देखरेख कर रहा हूँ, तो मैं उनमें से धब्बेदार या धब्बेदार भेड़, हर गहरे रंग का मेमना, और हर धब्बेदार या धब्बेदार बकरी को हटा दूँगा।

यही मेरी मजदूरी होगी। खैर, लाबान ने इस पर सहमत जिताई, और फिर उसने उस समझौते को रद्द करने की ठानी। उसने अपने बेटों को झुंड में भेज दिया।

वह उन विशेष रूप से वर्णित जानवरों को हटाता है, और फिर वह अपने झुंडों और याकूब के लिए छोड़े गए जानवरों के बीच तीन दिनों की यात्रा करता है। इसलिए, किसी भी तरह की क्रॉसब्रीडिंग नहीं होगी। अब, याकूब जो करता है वह यह है कि वह फिर से एक और लोक प्रथा का पालन करता है, और वह पीड़ों से शाखाएँ लेता है और छाल को छीलता है, जैसा कि हमें श्लोक 37 में बताया गया है, जिससे शाखा की सफेद अंतरनिहित लकड़ी उजागर होती है।

तो आपको छाल और सफेद, छाल और सफेद के बीच यह परिवर्तन देखने को मिलेगा। और फिर वह इन्हें पानी के कुंडों पर रखकर शुरू करेगा ताकि जब उसके पास मौजूद जानवर पानी पीने के लिए आएँ, और फिर मादा गर्मी में आएँ, तो दोनों के बीच संभोग होगा, दोनों के बीच प्रजनन होगा, और उनसे शाखाओं की तरह, वैकल्पिक रंग निकलेंगे। तो, फिर, प्रजनन से जो आएगा वह विशेष रूप से वर्णित जानवर होंगे जो जैकब का इनाम होंगे: धब्बेदार, धब्बेदार, और फिर काले जानवर।

और यही हुआ। और इसलिए, हम अध्याय 30 की आयत 43 में पाते हैं, इस तरह, वह आदमी बहुत समृद्ध हो गया और उसके पास बड़ी-बड़ी भेड़-बकरियाँ, नौकर-चाकर, ऊँट और गधे हो गए। तो यह उस सारी दौलत का सारांश है जो उसने जमा की थी, न सिर्फ भेड़-बकरियाँ, बल्कि दूसरे जानवर और एक बड़ा घराना भी।

तो, हमें यह समझना चाहिए कि परमेश्वर ने फिर से इस लोक रीति-रिवाज का इस्तेमाल किया, जैसा कि उसने दूदाफलों के साथ किया था। उसने इसे स्वीकार किया। उसने उनके सीमिति ज्ञान के साथ काम किया, यहाँ तक कि उनके धन को सुरक्षित रखने के लिए हेरफेर करने के उनके विचार के साथ भी।

फिर भी, उसने अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उस ज्ञान का उपयोग किया क्योंकि उसके उद्देश्य एक दीर्घकालिक थे, न कि एक छोटा उद्देश्य, एक छोटा लक्ष्य, बल्कि एक दीर्घकालिक लक्ष्य। तो, यह याकूब और उसके परिवार के प्रति परमेश्वर की कृपा और दया का एक जबरदस्त कार्य है। अब, यह सब कुछ जो हुआ है, उसके प्रकाश में, जहाँ एक बड़ी वृद्धि हुई है, बच्चों की उत्पत्ति हुई है, और फिर उसकी संपत्ति में बहुत वृद्धि हुई है, हम

अध्याय 31 में दृष्टिकोण में परिवर्तन पाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे चरवाहे जो अब्राहम के चरवाहों के साथ संघर्ष कर रहे थे, अध्याय 13 में लूत के चरवाहे, और फरि इसहाक के धन और

गरार के राजा अबीमेलक के चरवाहों के मामले में।

वहाँ तनाव था। इन सभी परदृश्यों में यह तनाव क्यों विकसित हो रहा है? क्योंकि चिरागाह की भूमि सीमिति है और पानी की भी सीमा है। और इसलिए इन विभिन्न समूहों के बीच संघर्ष होता था।

अध्याय 31, श्लोक 1 में, याकूब ने लाबान के बेटों को यह कहते हुए सुना, "याकूब ने हमारे पति की सारी संपत्ति ले ली है और हमारे पति की संपत्ति से यह सारी संपत्ति अर्जति की है।" श्लोक 2 में, याकूब ने देखा कि लाबान का उसके प्रति रवैया पहले जैसा नहीं है। अब, याकूब को अपनी पत्नियों और उनके बच्चों को अपने साथ चलने के लिए मनाना होगा, एक ऐसे देश में जाना होगा जहाँ वे नहीं जानते थे, और उन्हें भरोसा दिलाना होगा कि याकूब वास्तव में परमेश्वर की बुद्धि से मार्गदर्शन प्राप्त कर रहा है।

और वे अपने पति के घर को छोड़ने जा रहे थे। और इसलिए, वह पद 3 में उन्हें यह स्पष्टीकरण देना शुरू करता है कि उन्हें क्यों जाना चाहिए। और वह इसे बिल्कुल स्पष्ट करता है, है न? हमने इन पदों को पहले पढ़ा है, कि यह लाबान था जिसने उसे धोखा दिया था।

और भले ही वे चुपके से भागने, चोरी करने, लाबान को धोखा देने जा रहे थे, लेकिन यह सबसे अच्छा तरीका था जिससे वे सुरक्षित प्रस्थान सुनिश्चित कर सकते थे क्योंकि विह नहीं जानता था कि लाबान क्या करेगा। लाबान और उसके चरवाहों की क्षमता भी ऐसी ही थी। और अगर आप श्लोक 20 को देखें, तो यह कहता है: याकूब ने अरामी लाबान को धोखा दिया।

लाबान इस क्षेत्र, अराम में रहता है, और इसलिए उन्हें इस संबंध से अरामी के रूप में पहचाना जाता है। और उन्होंने अरामी भाषा बोली, मुझे कहना चाहिए अरामी, उसे यह न बताकर कि विह भाग रहा है। तो, उसने क्या किया? श्लोक 21, वह अपना सब कुछ लेकर भाग गया, पश्चिम की ओर फरात नदी को पार करके, और वह नदी है, और वह गलिली के पहाड़ी देश की ओर चला गया, जो गलील सागर के उत्तर-पूर्व में एक क्षेत्र में है।

इसलिए, वह आगे बढ़ रहा है, कनान देश के पास पहुँच रहा है। और इसलिए, हम पाते हैं कि विह अध्याय 31 की आयत 10 में एक स्वप्न का वर्णन करता है। और हम बार-बार इन स्वप्नों को सच होते हुए पाएंगे, और यही वह माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर कुलपतिओं से बात करता है, साथ ही उन लोगों से भी जो परमेश्वर के नियुक्त वंश और प्रतिज्ञा के नहीं हैं।

और इसलिए, हम जानते हैं कि अध्याय 20 में ऐसा ही मामला है, जहाँ अब्राहम और अबीमेलक के बीच यह रश्मि है जहाँ अब्राहम ने अबीमेलक से झूठ बोला, लेकिन अबीमेलक ने अपनी पत्नी के बारे में, आपको याद होगा कि पत्नी-बेटी का धोखा, लेकिन अबीमेलक ने एक सपना देखा। और हम पाएंगे कि लाबान को एक सपना आने वाला है। और यह श्लोक 24 में होता है।

फिर भगवान रात में एक सपने में अरामी लाबान के पास आए और उससे कहा, सावधान रहो याकूब से कुछ भी मत कहना, चाहे अच्छा हो या बुरा। इसलिए, सपने बहुत महत्वपूर्ण हैं,

और वे इस बात की पुष्टि करने का एक साधन हैं कि यह वास्तव में भगवान है जो बोल रहा है। इसलिए, श्लोक 10 में, मैंने एक बार एक सपना देखा था, और सपने में जानवरों के संभोग का वर्णन किया गया है जो धारीदार, धब्बेदार या धब्बेदार हैं, और हम यह भी मान सकते हैं कि वे रंगीन हैं।

पद 11 में कहा गया है, परमेश्वर का दूत, और फिर, बार-बार, स्वर्गदूत परमेश्वर के कार्य में और कुलपतिओं के जीवन में लगे हुए हैं। और इसलिए, वह इस स्वर्गदूत की बात करता है, और वह पद 13 में कहता है कि स्वर्गदूत खुद को परमेश्वर के रूप में पहचानता है। मैं बेतेल का परमेश्वर हूँ।

तो, परमेश्वर का दूत स्पष्ट रूप से परमेश्वर की उपस्थिति का एक प्रकार का प्रकटीकरण है। अब, सत्रियाँ आसानी से उनके साथ जाने के लिए राजी हो जाती हैं; उन्हें याकूब के साथ सह-षडयंत्रकारी होना चाहिए। और वे पद 14 से 16 में बताती हैं कि वे याकूब के साथ जाने के लिए क्यों सहमत हैं।

और ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके पति ने उनके साथ सही, न्यायपूर्ण व्यवहार नहीं किया है, जैसा कि उन्हें बेटियों के रूप में करना चाहिए, बल्कि उन्होंने उनके साथ बाहरी लोगों, वदेशियों जैसा व्यवहार किया है। और इसलिए, हम अपने पति की वरिसत, उनकी संपत्ति से कुछ भी नहीं मिला है। वह इसे अपने बेटों को दे रहे हैं।

हमें इसमें से कुछ भी नहीं मिला है। इसलिए, वे जो हुआ है उसे भगवान का चमत्कारी, अपूरत्याशति, उल्लेखनीय हस्तक्षेप मानते हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उन्हें वह मल्लिगा जो उनका हक है। श्लोक 16, जहाँ यह कहा गया है, निश्चित रूप से वह धन जो भगवान ने हमारे पति से छीन लिया है, वह हमारा और हमारे बच्चों का है।

इसलिए जो कुछ परमेश्वर ने तुमसे कहा है, वही करो। और इसलिए, जैसा कि हम पहले ही पढ़ चुके हैं, वह भाग गया। अब आगे बढ़ने से पहले जो महत्वपूर्ण है वह यह है कि श्लोक 19 में क्या हुआ, जब लाबान अपनी भेड़ों का ऊन कतरने गया था।

इसलिए, वह उसी में व्यस्त है। वह जैकब पर नजर रखने से कई दिन दूर है। हमें बताया जाता है कि राहेल ने अपने पति के घर के देवताओं को चुरा लिया था।

और यह न केवल लाबान के लिए बल्कि याकूब के लिए भी धोखा बन जाता है, क्योंकि याकूब को इन घरेलू देवताओं की चोरी के बारे में पता नहीं है। अब, घरेलू देवताओं, हम ठीक से नहीं जानते कि उनका क्या महत्व है। लेकिन हम जानते हैं कि घरेलू देवता पैतृक देवता थे जिन्हें वरिसत के आश्वासन के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता था यदि आपके पास घरेलू देवता हैं।

ऐसा हो सकता है कि इस्राएल के साथ-साथ प्राचीन नकिट पूर्व के देशों में भी यही हो रहा हो। लेकिन यह केवल एक प्रस्ताव है और इसकी कोई गारंटी नहीं है। इसका यह मतलब नहीं है कि लाबान का घराना पैतृक देवताओं की पूजा करता था।

लेकिन मुझे लगता है कि यह हमें बताता है कि संभवतः लआ और राहेल के साथ वरिसत की चर्चा के कारण, राहेल ने सोचा कि इन घरेलू देवताओं का होना उसके पति के खिलाफ दंडनीय होगा। साथ ही, जब तक उसके पास

भवषिय में यह घरेलू देवता होगा, शायद उसे यह साबूति करने के लिए इसकी आवश्यकता होगी कि वह लाबान की बेटी है और उनके बच्चे, लआ और राहेल के बच्चे, उनके पति के पोते हैं। हम बाद में कहानी में आने वाले पाठों में इस बात पर वापस आएंगे कि इन देवताओं का नपितान कैसे किया जाता है।

खैर, मैंने पढ़ा है कि कैसे लाबान ने रात में परमेश्वर द्वारा दिए गए सपने का सही तरीके से जवाब देने का फैसला किया। इसलिए, लाबान अपने आदमियों के साथ सात दिनों की मजबूरी भरी यात्रा के बाद उससे आगे निकल जाता है, और वह पहुंच जाता है। श्लोक 26 में, लाबान याकूब से कहता है, तुमने क्या किया है? यह आपको बगीचे की थोड़ी याद दिला सकता है, जहाँ आदम और हव्वा के साथ और फरि साँप के साथ भी यही सवाल पूछा गया है। इसलिए, लाबान कहता है, और मुझे भी जलदी से कहना चाहिए, जब यह अब्राहम के साथ दुरुव्यवहार से संबंधित है, कैसे अब्राहम ने अपनी पत्नी के बारे में झूठ बोला है, और कैसे फेरौन और अन्य लोगों द्वारा उससे वही सवाल पूछा गया है।

तुमने मुझे धोखा दिया है, और तुमने मेरी बेटियों को युद्ध में बंदी की तरह उठा लिया है। खैर, उसे गंभीरता से लेना बहुत मुश्किल है, क्योंकि अगर दोनों में से कोई धोखेबाज है, तो नशिकति रूप से हम लाबान को बड़ा धोखेबाज मान सकते हैं। और तुमने मेरी बेटियों को युद्ध में बंदी की तरह उठा लिया है।

खैर, ऐसा नहीं था। तुम चुपके से भागकर मुझे धोखा क्यों दे गए? तुमने मुझे क्यों नहीं बताया? और फरि वह इस काल्पनिक दावत और जश्न और खुशहाल वदिई के साथ आता है, और सब कुछ ठीक हो जाता है। खैर, ऐसा बिल्कुल भी नहीं था, कि उसका परिवार के प्रतिसकारात्मक रवैया नहीं था।

इसलिए, वह अभी भी अपने शब्दों का इसतेमाल खुद को संतुष्ट करने और खुद को सही ठहराने के लिए कर रहा है। श्लोक 29, मेरे पास तुम्हें नुकसान पहुंचाने की शक्ति है। अब, यह याकूब को नुकसान पहुंचा रहा है।

और यही बात याकूब को डर थी और इसीलिए वह चुपके से भाग गया। लेकिन तुम्हारे पति के परमेश्वर ने मुझसे कहा, सावधान रहना याकूब से कुछ भी न कहना, चाहे अच्छा हो या बुरा। इसलिए, वह उस पर प्रतिक्रिया करने जा रहा है।

वह याकूब का फायदा नहीं उठाने वाला है। लेकिन फरि वह तनाव को बढ़ाता है और श्लोक 30 में यह कहकर याकूब के खिलाफ आरोप बढ़ाता है, तुमने मेरे देवताओं को क्यों चुराया? और याकूब बहुत क्रोधित हो जाता है। ध्यान दें कि श्लोक 35 में क्या कहा गया है।

राहेल ने अपने पति से कहा, वह तम्बू में से होकर इन घरेलू देवताओं को ढूँढ रहा था। याकूब बहुत क्रोधित था, तुम बस जांच कर लो। मैं चोरी के मामले में नरिदोष हूँ।

और इसलिए, जब वह राहेल के तम्बू के पास आता है, तो वह तम्बू में आता है। राहेल अपने काठी के थैले में घर के देवताओं को छिपा रही है। और इसलिए राहेल अपने पति से कहती है, मेरे प्रभु, नाराज मत होइए, क्योंकि मैं आपकी उपस्थिति में खड़ी नहीं हो सकती।

तो, वह अपनी काठी पर बैठी है। देवता छपि हुए हैं। वे इतने छोटे रहे होंगे कि उन्हें काठी के थैले में रखा जा सके।

मैं खड़ी नहीं हो सकती क्योंकि मुझे मासकि धरम चल रहा है। इसलिए उसके और उसकी सपत्ति के प्रति सम्मान के कारण, वह काठी के थैलों से नहीं देखता। श्लोक 36, याकूब बहुत पीड़ित महसूस करता है।

और वह कहता है, मेरा अपराध क्या है? श्लोक 36. तो, उसके पास इन 20 सालों में लाबान के लिए जो कुछ भी किया है, उसका जवाबी आरोप है। खैर, लाबान इस बात से सहमत है कि शांति संबंध होना चाहिए।

और यही तब होता है जब लाबान पद 44 में वाचा बांधने की पेशकश करता है। और इसलिए उन के पास इस शांति संधि के दो गवाह हैं। सबसे पहले, एक पत्थर जिसे एक सतंभ के रूप में स्थापित किया गया है, और फरि पत्थरों के ढेर के रूप में जो इस अवसर को भी चिह्नित करता है।

और फरि हम शपथ लेते हैं, उसके बाद वाचा का बलदान भोज होता है। आइए इसे उठाते हैं। पद 53 में, अब्राहम का परमेश्वर और नाहोर का परमेश्वर, नाहोर अब्राहम का भाई है, लाबान वंश का पूर्वज, उनके पिता का परमेश्वर हमारे बीच न्याय करे।

इसलिए, यदि उनकी शांति व्यवस्था में कोई उल्लंघन है, किसी एक या दूसरे के विरुद्ध लाभ या हिसा न करना, तो परमेश्वर उसका न्याय करेगा। तो, आप देखिए, यह कोई शपथ नहीं है जो परमेश्वर की नषिठा के आधार पर ली जाती है। इसलिए, याकूब ने अपने पिता, इसहाक के भय के नाम पर शपथ ली।

ध्यान दें कि भय को बड़े अक्षरों में लिखा गया है। आइए इसे पहले की आयतों में समझाते हैं। आयत 42, जहाँ याकूब लाबान से कहता है, अगर मेरे पिता का परमेश्वर, वास्तव में इसका अनुवाद किया जा सकता है, शाब्दिक रूप से पिता इसहाक को संदर्भित नहीं करता है, तो यह दादा हो सकता है जो अब्राहम को संदर्भित करता है, या यह केवल पूर्वज हो सकता है, मेरे पूर्वजों का परमेश्वर, अब्राहम का परमेश्वर और इसहाक का भय।

अब, यह कोई अलग देवता नहीं है, जैसा कि कुछ लोग सुझा रहे होंगे, बल्कि, जैसा कि आप देख रहे हैं, यह मेरे पिता के परमेश्वर से पहले के देवता का एक संयोजन है। अब, मेरे पिता का परमेश्वर कौन है? वह अब्राहम का परमेश्वर है और वह इसहाक का भय है। इसलिए, इसहाक का भय अब्राहम के परमेश्वर और मेरे पिता के परमेश्वर के समान ही है।

यहाँ इसहाक के भय का प्रयोग क्यों किया गया है? खैर, ऐसा इसलिए है क्योंकि यहाँ एक अलंकार है जिसमें कारण, या बल्कि मैं इसे उलट दूँ, जहाँ कारण के लिए प्रभाव रखा जाता है। इस मामले में, कारण ईश्वर है। यह कहने के बजाय कि वह इसहाक का ईश्वर है, वह ईश्वर के प्रभाव, अर्थात् भय को रखता है।

और यह भय परमेश्वर के अब्राहम परिवार के साथ सुरक्षा, प्रावधान के वाचा संबंध में बंधा हुआ है, और जब परमेश्वर प्रकट होता है, तो वह उन लोगों के दिल में भय पैदा करता है जो परमेश्वर के इस प्रकटन को प्राप्त करते हैं। यह एक लकवाग्रस्त भय नहीं है, बल्कि यह एक वसिम्पकारी भावना है। यह वास्तविकता का सामना करने की भावना है।

इसका परिणाम यह है कि आसूथावानों और उन लोगों के मामले में आराधना की प्रतिक्रिया होती है जो ईश्वर की महान योजना को स्वीकार करने और उसमें सहयोग करने के लिए तैयार नहीं हैं। इसलिए, हम उनके पूर्वजों, अब्राहम के ईश्वर और नाहोर के ईश्वर के नाम पर ली गई शपथ को पढ़ रहे हैं। और फिर यह बलदान भोज है।

यह शांति संधियों की विशेषता थी, जहाँ बलिके पशु का भोजन किया जाता था, जो संधिके औपचारिक अनुष्ठान की पूर्ति करता था। अब जबकि शांतिपूर्ण प्रस्थान हो चुका है, आयत 55 में ध्यान दें कि अगली सुबह, लाबान ने अपने पोते-पोतियों और अपनी बेटियों को चूमा और उन्हें आशीर्वाद दिया। इस प्रकार, मेल-मिलाप होता है।

फिर वह चला गया और घर लौट आया। अब जब हम अगली बार अध्याय 32 और उसके बाद के अध्याय को उठाएंगे, तो हम पाएंगे कि एक और तरह का संघर्ष होता है। परिवार के भीतर संघर्ष और अब भगवान के साथ संघर्ष।

और परमेश्वर के साथ उसके संघर्ष का परिणाम याकूब के चरित्र में होने वाला एक उल्लेखनीय परिवर्तन है। और हम पाएंगे कि जिस तरह अब्राहम और नाहोर की दो शाखाओं के बीच मेल-मिलाप का सुखद परिणाम है, उसी तरह याकूब की वापसी पर याकूब और एसाव के बीच भी एक सुखद मेल-मिलाप होने वाला है। यह हमारा अगला पाठ होगा, पाठ 19।

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज द्वारा उत्पत्तिका पुस्तक पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 18, याकूब और लाबान, उत्पत्ति अध्याय 29 से 31 है।